हड़प्पा सभ्यता और वैदिक साहित्य

भगवान सिंह

डॉ. महादेव साहा को

चौथे संस्करण का आमुख

इस पुस्तक के प्रथम प्रकाशन के समय इसके साथ शब्दानुक्रमणी भी दी गई थी। बाद के संस्करण में इसमें अन्य जो भी बदलाव किए गए, पर शब्दानुक्रमणी के लिए समय नहीं निकाल सका। यह अभाव बाद के संस्करण में भी बना रहा। पुस्तक का आकार भी कुछ दूर तक इसमें बाधक रहा।

इस बार हमने पुस्तक को आदि से अन्त तक नए सिरे से संपादित करते हुए ऐसे प्रसंगों को, जो अब स्वीकृत से हो गए हैं, कुछ घटाया है। कतिपय अन्य स्थलों में कुछ अंशों को निकाला है। इस बात का पूरा ध्यान रखा गया है कि पुस्तक की पाठ्य सामग्री इससे प्रभावित न हो। पहले की दो सहायक ग्रन्थ सूचियों को एकसार कर दिया गया है तथा शब्दानुक्रमणी दी गई है।

—भगवान सिंह

प्रथम संस्करण का आमुख

एक प्रसिद्ध इतिहासकार ने इतिहास और गल्प के बीच फ़र्क़ करते हुए लिखा था कि इतिहास एक ऐसा गल्प है जिसमें नामों और तिथियों को छोड़कर सब कुछ ग़लत होता है और गल्प एक ऐसा इतिहास जिसमें नामों और तिथियों को छोड़कर सब कुछ सही। वैदिक कालीन इतिहास के विषय में तो नामों और तिथियों के सही होने का दावा भी नहीं किया जाता। इसके विषय में जितनी विचित्र और परस्पर अनमेल बातें अधिकारी विद्वानों द्वारा भी की जाती रही हैं, उनकी तुलना विश्व-इतिहास के किसी अन्य क्षेत्र और काल से नहीं की जा सकती। इसके बावजूद हमारे सांस्कृतिक दाय का सबसे जीवन्त और उर्वर स्रोत यही रहा है। इसके नैतिक, बौद्धिक, सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक आदर्श परवर्ती कालों पर कुछ इस तरह छाए रहे कि वेद को न मानने का अर्थ ही था नास्तिक। वेद ही ब्रह्म और वेद ही अन्तिम प्रमाण! इससे विरोध उत्पन्न होने पर अपने प्रत्यक्ष अनुभव और ज्ञान को भी नकारा जा सकता था, पर वेद-वाक्य को नहीं। वह अकाट्य था। आखिर वह उपलब्धि का कौन-सा शिखर-बिन्दु था जिस पर इस दौर में भारतीय समाज या, कम-से-कम, इसका स्वामी वर्ग पहुँचा था कि अपने पराभव के दिनों में भी वह इसी के सुखद स्वप्न देखता जीवित रहा और इसे पुनः हासिल करने के मंसूबे बाँधता रहा? यदि संक्षेप में कहें तो, यही वह जिज्ञासा थी जो लेखक को सृजनात्मक साहित्य से अलग ले जाकर इतिहास के भयावह परधर्म में विगत पन्द्रह वर्षों से निरन्तर भटकाती रही और इसका जो उत्तर मिला वही इस पुस्तक के रूप में सुधी विद्वानों के सामने है।

जब इस विषय पर जब काम करना आरम्भ किया था तब अकादमिक पर्यावरण आज से कुछ भिन्न था। हड़प्पा सभ्यता वस्तुतः वैदिक सभ्यता ही थी, इस बात का दावा करने की बात तो दूर, हड़प्पा सभ्यता के साथ इसकी समवर्तिता और निकट सम्बन्ध की बात भी इसके प्रस्तावक की अकादमिक निष्ठा और निष्पक्षता को संदिग्ध बनाने के लिए पर्याप्त थी और इसका साहस या दुस्साहस बहुत कम लोग ही कर पाते थे और वे इसका मूल्य भी चुकाने को बाध्य होते थे। आज अनेक कोनों से और अनेक कारणों से, जिनमें से एक है भारत में आर्यों के प्रवेश का एक भी प्रमाण जुटा पाने में

पुरातत्त्व की विफलता और वैदिक सभ्यता के केन्द्र सरस्वती-क्षेत्र से हड़प्पा और पूर्व-हड़प्पाकालीन स्थलों की प्राप्ति, यह आवाज़ आने लगी है कि हड़प्पा सभ्यता वस्तुतः वैदिक सभ्यता ही थी। पर इसके बावजूद अपेक्षाकृत अधिक सावधानी बरतनेवाले अध्येता अभी कुछ और रुकने और नए साक्ष्यों के सामने आने की प्रतीक्षा के पक्ष में हैं।

वास्तविकता यह है कि हड़प्पा सभ्यता के पूरे प्रसार में भौतिक साक्ष्य भरे पड़े हैं। इनकी कमी का प्रश्न नहीं उठता। असली कठिनाई साहित्यिक साक्ष्यों को भौतिक साक्ष्यों से जोड़ने की है और इसके लिए मूल वैदिक कृतियों का पुनरावलोकन पुरातत्त्व से कम महत्त्वपूर्ण नहीं है। यदि लेखक के प्रयास की कुछ सार्थकता है तो इसी दृष्टि से।

यह शुद्ध शास्त्रीय तकाज़ों से लिखा गया शोध-प्रबन्ध नहीं है। शास्त्रीयता के प्रति विशेष आग्रहशील इतिहासकारों को यदि इसकी कुछ बातें खटकती हैं तो इसके लिए हम उनसे क्षमाप्रार्थी हैं, पर हमारा लक्ष्य इसे केवल 'मूर्धन्य' विद्वानों के समक्ष पेश करना नहीं, अपितु इतिहास, संस्कृति और जातीय परम्परा में रुचि लेनेवाले सामान्य पाठकों तक पहुँचने का और तथ्यान्वेषण की इस यात्रा में उन्हें अपना सहयात्री बनाने का भी रहा है और इस दृष्टि से आलेख को यथासम्भव कम बोझिल किन्तु सर्वथा प्रामाणिक और तर्कसंगत बनाने का प्रयत्न किया गया है। वैदिक कृतियों के उद्धरणों को सन्धि-विच्छेद करके दिया गया है ताकि संस्कृत का साधारण ज्ञान रखनेवाले अध्येता भी इनका जायज़ा ले सकें। इतिहास का अध्ययन मात्र 'विशेषज्ञों' या पेशेवर इतिहासकारों तक सीमित तथ्यों और आँकड़ों की दहशतनाक भीड़ बनकर न रह जाए, अपितु हमारी अन्तर्दृष्टि को भी प्रखर करे, यह रहा है हमारा दृष्टिकोण और इसीलिए साक्ष्यों को प्रस्तुत करते समय इनके प्रति पूर्ववर्ती विद्वानों द्वारा अपनाए गए रुख के कारण और औचित्य पर विचार, अपने द्वारा किए गए अर्थ का तार्किक व भाषिक आधार, इनकी विस्तार से परीक्षा, नए तथ्यों और साक्ष्यों की ओर ध्यानाकर्षण तथा आवश्यकतानुसार सैद्धान्तिक पक्ष का विवेचन इसमें जगह-जगह देखने में आएगा, जो अपने ज्ञान और ग्रहणशीलता के अनुसार किन्हीं पाठकों को सर्वथा वांछनीय, कुछ को किंचित् विषयान्तर और कुछ को उबाऊ भी लग सकता है। एक का अमृत दूसरे का ज़हर। दायरा बड़ा रखने पर यह संकट तो स्वाभाविक है ही।

—भगवान सिंह

अनुक्रम

तीसरे संस्करण का आमुख 7
प्रथम संस्करण का आमुख 9

भाग-1

अध्याय-1 : **समस्या का स्वरूप** 17

1. भारतीय इतिहास-लेखन की पृष्ठभूमि और विचार-दृष्टियाँ, 2. वैज्ञानिक ऐतिहासिक दृष्टि, 3. पुरातत्त्व और वैदिक काल, 4. मूल भारोपीय जन, 5. वैदिक साहित्य, 6. हड़प्पा सभ्यता का उद्घाटन और वैदिक समस्या, 7. विभिन्न शाखाओं के बीच सन्तुलन

अध्याय-2 : **आर्य-आक्रमण का मिथक** 37

1. कोरी पट्टी, 2. आर्य जन, 3. जनसंख्या का प्रश्न, 4. घुड़सवारी और लोहे का ज्ञान, 5. दो आक्रमणों की कथा, 6. आक्रमण और जन-युद्ध, 7. हड़प्पा सभ्यता पर हमला, 8. वैदिक सभ्यता का प्रसार-क्षेत्र, 9. सम्पर्क-क्षेत्र, 10. सभ्यता की आवयविकता, 11. सांस्कृतिक उपलब्धियाँ, 12. हड़प्पा का उदय और अस्त, 13. उपसंहार

अध्याय-3 : **वैदिक संघर्षों की प्रकृति** 61

1. संघर्ष के स्तर, 2. असुर, 3. वैदिकों के शत्रु, 4. आर्त्तनाद, 5. इन्द्र-विजय, 6. युद्ध, 7. आयुध

अध्याय-4 : **अर्थव्यवस्था** 77

1. वैदिक पशुचारी संस्कृति का आधार, 2. पशुपालन, 3. कृषि, 4. कार्य-विभाजन और शिल्प, 5. धन-सम्पत्ति के रूप, 6. माप-तौल और विभाजन

अध्याय-5 : **व्यापार और वाणिज्य** 97

1. हड़प्पा सभ्यता का व्यापारिक प्रसार, 2. वैदिक व्यापार के विषय में आशंकाएँ, 3. व्यापारिक सम्पर्क-सूत्र, 4. यात्राएँ, 5. वैदिक ऋषि और राजा, 6. वैदिक देवता, 7. वैदिक सार्थ, 8. वैदिक व्यापारी और उनके प्रतिनिधि, 9. व्यापारिक प्रतिस्पर्धा, 10. व्यापारिक प्रसार

अध्याय-6 : **वैदिक उद्यमियों के खनिज स्रोत** 129

अध्याय-7 : **आवास और नगर** 139

1. आवास के पर्याय, 2. पक्की ईंटों का प्रयोग, 3. आवास की कामना, 4. नगर, 5. नगर-योजना, 6. नगर-प्रशासन, 7. भोगवादिता और दुर्व्यसन

अध्याय-8 : **भाषा और भारोपीय जन** 153

1. भाषा परिवार की अवधारणा, 2. लुप्त भाषा की परिकल्पना, 3. संस्कृत का अतिरंजित महत्त्व, 4. ध्वनि-नियम और मूल भाषा की पुनर्सर्जना, 5. अर्थ-विकास, 6. प्राकृतिक परिवेश, 7. उपसंहार

अध्याय-9 : **समाज** 177

1. बहुजातीयता के पुरातात्विक और साहित्यिक साक्ष्य, 2. विवाह, 3. अन्त्येष्टि, 4. वर्ण विभाग, 5. स्त्रियों की स्थिति, 6. नैतिक आदर्श, 7. खान-पान, 8. वेशभूषा, 9. राजसत्ता व प्रशासन

अध्याय-10 : **लेखन और शिक्षा** 205

1. हड़प्पा लिपि और भाषा, 2. भारत की जातीय परम्परा में लेखन के प्रमाण, 3. वैदिक साहित्य में लेखन के प्रमाण, 4. ऋग्वेद में लेखन के प्रमाण, 5. शिक्षा, 6. शिक्षा के विषय

अध्याय-11 : **धर्म और विश्वास** 229

1. धर्म ओर विश्वास की प्रकृति, 2. मातृ-देवियाँ, 3. उर्वरता की उपासना, 4. रुद्र शिव, 5. सोम, 6. हड़प्पा सभ्यता में शिव और सोम, 7. यज्ञ और पूजा

भाग-2

अध्याय-1 : **वैदिक रचना-काल** 257

1. मैक्समूलर का काल-निर्धारण, 2. अवेस्ता और ऋग्वेद, 3. ज्योतिष और वैदिक रचना-काल, 4. एशिया माइनर के अभिलेख, 5. कुर्गान संस्कृति, 6. वैदिक अन्तःसाक्ष्य, 7. पुरातत्व, 8. उपसंहार

अध्याय-2 : **सभ्यता की दिशा में प्रथम चरण** 279

1. पश्चिमी एशिया की सृष्टि कथाएँ, 2. भारतीय परम्परा

अध्याय-3 : **कृषि-क्रान्ति और देवासुर संग्राम** 291

1. सुर और असुर, 2. कृषि यज्ञ, 3. देवासुर संघर्ष, 4. आरम्भिक कठिनाइयाँ, 5. कृषि यज्ञ का विस्तार, 6. पूर्वी क्षेत्रों से देवों का पलायन

अध्याय-4 : **अतिरिक्त उत्पादन और स्वर्ग की तलाश** 311

1. कृषिकर्मी देव

अध्याय-5 : **प्रभाव-विस्तार और प्रव्रजन** 321

1. आर्य और आर्य बस्तियाँ, 2. भारत से पश्चिम-उत्तर के पड़ोसी देशों के सामान्य लक्षण, 3. बलूचिस्तान, 4. अफ़ग़ानिस्तान, 5. मध्य एशिया, 6. ईरान, 7. बाल्टिक क्षेत्र, 8. ग्रीस, 9. एशिया माइनर, 10. दजला और फ़रात का क्षेत्र

अध्याय-6 : **नगर सभ्यता का उदय** 357

1. भारत की स्वविशिष्ट स्थिति, 2. वर्तमान स्थिति, 3. विकास की प्रकृति, 4. शहरीकरण की पूर्वापेक्षाएँ, 5. सामाजिक व तकनीकी विकास, 6. शहरीकरण के प्रसार की दिशा

अध्याय-7 : **नगर सभ्यता का पतन** 377

1. बाढ़, 2. आक्रमण, 3. सामाजिक और आर्थिक ह्रास

परिशिष्ट

परिशिष्ट-1 : **सरस्वती घाटी से पलायन** 393

1. जल-प्रलय, 2. महादुर्भिक्ष

परिशिष्ट-2 : **पुनरवलोकन** 409

काल-निर्धारण, घोड़ा और रथ, आक्रान्ता का भूत, सेना और आयुध, पशुपालन और कृषि, सिंचाई और जल-प्रबन्धन, भांड, उद्योग-व्यवसाय, चाँदी, खनन, सुदूर-व्यापार, मार्ग और यात्रा से सम्बन्धित शब्दावली, यातायात और परिवहन से सम्बन्धित शब्दावली व उक्तियाँ, वेग और क्षिप्रता के सूचक शब्दावली, व्यापार से सम्बन्धित शब्दावली, अथर्व 3.15 से ध्वनित कुछ कूट प्रतीक, आवास और नगर, आवास के रूप, वैदिक स्थापत्य, नगर-योजना, प्रशासन तन्त्र और अमला वर्ग, भाषा, समाज, समृद्धि, अलंकरण से सम्बन्धित कुछ शब्द, धर्म

सहायक ग्रन्थ एवं निबन्ध 469

अंग्रेज़ी ग्रन्थ-सूची में प्रयुक्त संकेत 499

शब्दानुक्रमणी 501